DHYEYA IAS
most trusted since 2003

DAILY pre PARE
Current affairs summary for prelims

4 September, 2023

भारत में सिंचाई

सन्दर्भ: हाल की नवीनतम एवं छठी लघु सिंचाई गणना रिपोर्ट (MIC) निजी स्वामित्व वाले सिंचाई स्रोतों से पानी निकालने के लिए बिजली को प्रमुख शक्ति स्रोत के रूप में दिखाती है।

- हालांकि एमआईसी रिपोर्ट पूर्व डेटा को दर्शाती है, उपयोग की वर्तमान स्थिति को नहीं, इस रिपोर्ट का नवीनतम संस्करण 2017-18 में सिंचाई के रुझान पर केंद्रित है।
- ब्लॉक स्तर पर विस्तृत डेटा संग्रह को सार्वजनिक होने में कई वर्ष लग जाते हैं।
- भूजल निष्कर्षण के लिए बिजली के उपयोग में वृद्धि अत्यधिक गहराई से पानी निकालने में सक्षम ट्यूबवेल और बोरवेल की क्षमता पर निर्भर करती है।
- 15 मीटर तक पानी खींचने वाले बोरवेल और तालाब अभी भी भारत में सिंचाई के प्रमुख स्रोत हैं लेकिन उनकी संख्या में कमी आई है।
- 35 मीटर तक के उथले ट्यूबवेल की लागत 59 लाख से घटकर 55 लाख हो गई है।
- 70 मीटर तक के मध्यम आकार के कुएं 31 लाख से बढ़कर 43 लाख हो गए, जबकि गहरे कुएं (70 मीटर से अधिक) 26 लाख से बढ़कर 37 लाख हो गए।
- इस रिपोर्ट में अधिक शक्तिशाली और गहराई तक पहुंच वाले ट्यूबवेलों में वृद्धि के पीछे के कारणों का कोई उल्लेख नहीं किया गया है।
- राज्य सरकारों की योजनाएं और प्रोत्साहन ऐसे ट्यूबवेलों में वृद्धि करने और उसकी उपयोगिता को समझा सकते हैं, जो ऊर्जा-कुशल जल निष्कर्षण में एक अहम भूमिका निभा सकता है।
- इस रिपोर्ट के अनुसार, देश में 23.14 मिलियन लघु सिंचाई संयंत्र थे, जिनमें से 94.8% सिंचाई के लिए थे जबकि, भूजल और सतही जल निष्कर्षण के लिए 5.2% लघु सिंचाई से संयंत्र थे।

अग्रणी राज्य:

- उत्तर प्रदेश में देश में सबसे अधिक 17.2% एमआई योजनाएं संचालित हैं।
- उत्तर प्रदेश के बाद, एमआई योजनाओं के लिए अन्य अग्रणी राज्य महाराष्ट्र (15.4%), मध्य प्रदेश (9.9%), और तमिलनाडु (9.1%) हैं।
- भूजल योजनाओं के सन्दर्भ में उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु और तेलंगाना अग्रणी राज्य हैं।
- सतही जल योजनाओं में महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलंगाना, ओडिशा और झारखंड की हिस्सेदारी सबसे अधिक है।

भारत में सिंचाई योजनाएँ

- **पीएमकेएसवाई**: यह केंद्रीय योजना चार घटकों के माध्यम से सिंचाई का विस्तार करती है और कृषि में जल दक्षता बढ़ाती है।
- **एआईबीपी**: यह केंद्रीय योजना सिंचाई विकास को गति देती है, नए और मौजूदा बुनियादी ढांचे के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है।
- **भूजल प्रबंधन**: केंद्रीय जल प्रबंधन योजना, संसाधनों को मजबूत करने और दक्षता के माध्यम से सिंचित कृषि उत्पादकता में सुधार करती है।
- **पीएमएफबीवाई**: केंद्रीय प्रकृति की यह योजना प्राकृतिक आपदाओं, कीटों और बीमारियों से फसलों के नुकसान का सामना करने वाले किसानों के लिए फसल बीमा और वित्तीय सहायता प्रदान करती है।
- **राष्ट्रीय कृषि विकास योजना**: यह एक केंद्रीय योजना है, जो सिंचाई, जल प्रबंधन और अन्य परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करके कृषि और संबद्ध गतिविधियों को बढ़ावा देती है।

(**नोट:** प्रत्येक योजना के बारे में विस्तार से पढ़ें)

GRIHA (गृह) मानदंड

सन्दर्भ: भारतीय सेना के लिए आगामी थल सेना भवन के निर्माण में गृह-IV द्वारा निर्धारित हरित मानदंडों का पालन किया जाएगा।

- भारतीय सेना के लिए नया थल सेना भवन (TSB) लगभग 39 एकड़ में बनाया जा रहा है।
- यह पर्यावरणीय स्थिरता को ध्यान में रखते हुए GRIHA-IV हरित मानदंडों का पालन करता है।
- इस भवन का डिज़ाइन 100 वर्ष के जीवन काल और भूकंप प्रतिरोधक क्षमता को ध्यान में रखकर तैयार किया जा रहा है जिसे मई-जून 2025 तक तैयार होने की सम्भावना है।
- इसमें ग्रिड इंटरैक्टिव सौर पीवी सिस्टम, सेंसर-आधारित एलईडी लाइटिंग, ईवी चार्जर और ऊर्जा दक्षता के लिए एक भवन प्रबंधन प्रणाली का निर्माण भी शामिल है।
- परिसर में सीवेज उपचार संयंत्र, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, वर्षा जल संचयन और भूजल पुनर्भरण के लिए ग्रीन पेवर ब्लॉक पार्किंग का भी निर्माण किया जाएगा।

एकीकृत पर्यावास मूल्यांकन के लिए ग्रीन रेटिंग

- GRIHA, जिसे इंटीग्रेटेड हैबिटेट असेसमेंट के लिए ग्रीन रेटिंग के रूप में जाना जाता है, TERI (द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट) और नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) द्वारा संयुक्त रूप से स्थापित एक संगठन है।
- GRIHA का प्राथमिक उद्देश्य हरित इमारतों और सतत-स्थायी वातावरण के लिए स्पष्ट मानक स्थापित करना है।
- यह किसी इमारत के संपूर्ण जीवन चक्र के दौरान उसके पर्यावरणीय प्रदर्शन का व्यापक मूल्यांकन करता है।
- GRIHA के मूल्यांकन मानदंडों में मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों मानक शामिल हैं, और यह विभिन्न राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त बेंचमार्क पर विचार करता है।
- जो इमारतें GRIHA की कठोर पर्यावरणीय और स्थिरता आवश्यकताओं को सफलतापूर्वक पूरा करती हैं, उन्हें "हरित इमारतों" की उपलब्धि प्राप्त होती है।

GRIHA रेटिंग उपकरण और मानदंड

- GRIHA एक रेटिंग उपकरण है जो राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत बेंचमार्क के आधार पर भवन के प्रदर्शन का आकलन करता है और यह भारत के विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में सभी प्रकार की इमारतों पर लागू होता है।
- GRIHA का लक्ष्य ऊर्जा खपत, अपशिष्ट उत्पादन और नवीकरणीय जैसे पहलुओं को प्रबंधित करना है।
- यह किसी इमारत के पूरे जीवन चक्र के दौरान उसके पर्यावरणीय प्रदर्शन का मूल्यांकन करता है, और "हरित इमारत" के रूप में योग्यता के लिए एक मानक निर्धारित करता है।
- यह रेटिंग प्रणाली राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित एवं उभरती ऊर्जा और पर्यावरण प्रथाओं को संतुलित करती है।
- नवीनतम वैज्ञानिक विकास हेतु सभी दिशानिर्देश और मानदंड प्रत्येक तीन वर्ष में संशोधन के अधीन हैं।

मानदंड

- GRIHA रेटिंग प्रणाली में 34 मानदंड शामिल हैं जिन्हें चार खंडों में वर्गीकृत किया गया है: साइट चयन और योजना, संसाधन संरक्षण, भवन संचालन और रखरखाव, तथा नवाचार।
- परियोजनाएं मानदंडों को पूरा करने के लिए अंक अर्जित करती हैं, और कुल अंक प्रमाणन स्तर (एक स्टार से पांच स्टार तक) निर्धारित करते हैं, प्रमाणन के लिए न्यूनतम 50 अंकों की आवश्यकता होती है।

Face to Face Centres

DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029

dhyeyaias.com

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान

- GRIHA को अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त है और यह भवन निर्माण क्षेत्र में नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाने सहित वैश्विक सतत विकास प्रयासों का समर्थन करता है।
- यह "कॉमन कार्बन मैट्रिक" जैसे उपकरणों के माध्यम से वैश्विक निर्माण ऊर्जा के लिए डेटा संग्रह में अहम भूमिका निभाता है, जो "द क्लाइमेट रियलिटी प्रोजेक्ट" जैसी पहल में योगदान देता है।

जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं (IPBES) और आक्रामक विदेशी प्रजातियों पर अंतर सरकारी विज्ञान-नीति मंच

सन्दर्भ: जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं पर अंतर सरकारी विज्ञान-नीति मंच (IPBES) के 140 से अधिक सदस्य निकाय की 10वीं पूर्ण बैठक के लिए सभी बॉन, जर्मनी में एकत्र हुए हैं।

- 49 देशों के 86 विशेषज्ञों द्वारा विकसित इस रिपोर्ट को चार वर्ष के बाद पूर्ण सत्र में प्रतिनिधियों द्वारा अनुमोदित किया जाएगा।
- आक्रामक विदेशी प्रजातियाँ जैव विविधता हानि की एक प्रमुख करक हैं और दिसंबर 2022 में जैविक विविधता सदस्यों पर 193 कन्वेंशन द्वारा अपनाए गए कुनमिंग-मॉन्ट्रियल ग्लोबल बायोडायवर्सिटी फ्रेमवर्क (जीबीएफ) के लिए केन्द्रीय क्षेत्र हैं।
- जीबीएफ - 6 का लक्ष्य 2030 तक जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं पर आक्रामक विदेशी प्रजातियों के प्रभावों को खत्म करना या कम करना है।
- वर्ष 2030 तक आक्रामक विदेशी प्रजातियों को कम से कम 50% तक कम करना है, जिससे जैव विविधता संरक्षण में योगदान मिलेगा।

आईपीबीईएस

- आईपीबीईएस एक स्वतंत्र अंतरसरकारी निकाय है जो जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के लिए विज्ञान-नीति इंटरफेस को बढ़ाने के लिए समर्पित है।
- इसका लक्ष्य जैव विविधता के संरक्षण और सतत उपयोग के साथ-साथ दीर्घकालिक मानव कल्याण और सतत विकास का समर्थन करना है।
- आईपीबीईएस संयुक्त राष्ट्र निकाय नहीं है लेकिन यूएनईपी से सचिवालय सेवाएं प्राप्त करता है।
- आईपीबीईएस में वर्तमान में 137 सदस्य देश शामिल हैं, जो संयुक्त राष्ट्र के किसी भी सदस्य देश के लिए खुले हैं।

आईपीबीईएस के चार प्राथमिक उद्देश्य:

- विशिष्ट विषयों, पद्धतिगत मुद्दों और क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर मूल्यांकन करना।
- नीति-प्रासंगिक उपकरणों और पद्धतियों की पहचान करना, उनके उपयोग को सुविधाजनक बनाना और विकास को उत्प्रेरित करना।
- सदस्य राज्यों, विशेषज्ञों और हितधारकों की प्राथमिकता क्षमता, ज्ञान और डेटा आवश्यकताओं को पूरा करना।
- संचार और पहुँच के माध्यम से उनके काम का व्यापक प्रभाव सुनिश्चित करना।

आक्रामक प्रजाति

- आक्रामक प्रजाति एक ऐसे जीव को संदर्भित करती है जो एक अलग क्षेत्र से उत्पन्न होता है और एक विशेष क्षेत्र में मूल प्रजातियों के लिए खतरा उत्पन्न करता है।
- ये प्रजातियाँ संभावित रूप से देशी पौधों और जानवरों के विलुप्त होने, जैव विविधता को कम करने, सीमित संसाधनों के लिए स्थानीय जीवों के साथ प्रतिस्पर्धा में शामिल होकर उनके आवासों को नुकसान पहुंचा सकती हैं।
- आमतौर पर, एक नए क्षेत्र में उनका आगमन विभिन्न माध्यमों से होता है जैसे : आकस्मिक आपदाएं, मानवीय गतिविधियाँ इत्यादि।
- निम्नलिखित आरेख किसी प्रजाति को आक्रामक विदेशी प्रजाति के रूप में वर्गीकृत करने की प्रक्रिया को दर्शाता है।

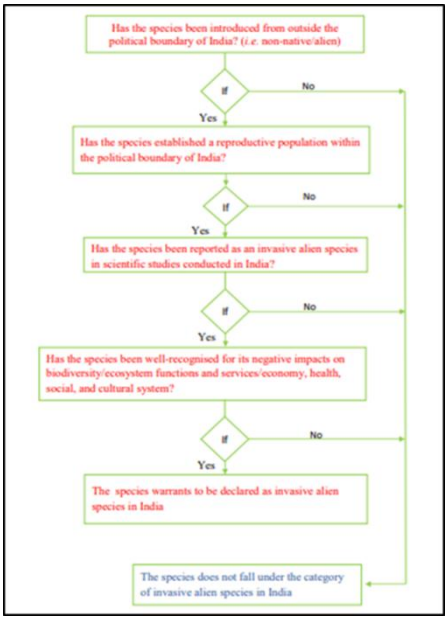

भारत में आक्रामक प्रजातियाँ

- **स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र**: 54 स्थलीय पौधों की प्रजातियाँ।
- **जलीय पारिस्थितिकी तंत्र**: 56 प्रजातियाँ, जिनमें मीठे पानी और खारे पानी में सूक्ष्मजीव, जलीय पौधे, मछलियाँ और समुद्री आक्रामक प्रजातियाँ शामिल हैं।
- **कृषि पारिस्थितिकी तंत्र**: 47 प्रजातियाँ, जिनमें कवक, बैक्टीरिया, वायरस, नेमाटोड और आक्रामक कीड़े शामिल हैं।
- **प्रमुख द्वीप पारिस्थितिकी तंत्र**: 14 प्रजातियाँ, जिनमें विभिन्न कीड़े, मोलस्क, मछलियां, उभयचर, सरीसृप, पक्षी और स्तनधारी शामिल हैं।

कुल मिलाकर, भारत में इन पारिस्थितिक तंत्रों में 173 आक्रामक विदेशी प्रजातियां (आईएएस) हैं।

आम तौर पर पाई जाने वाली विदेशी प्रजातियाँ और उनके स्थान:

- **अफ्रीकी सेब घोंघा (Achatina Fulica)** - सबसे पहले अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में रिपोर्ट किया गया, अब पूरे भारत में पाया जाता है।
- **पपाया मीली बग (Paracoccus marginatus)** - असम, पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु में पाया जाता है।
- **कपास मीली बग (Phenacoccus solenopsis)** - दक्कन में कपास की फसल को प्रभावित करता है।
- **अमेज़ॅन सेलफ़िन कैटफ़िश (Pterygoplichthys pardalis)** - कोलकाता की आर्द्रभूमियों में मछली की आबादी को नुकसान पहुंचाने के लिए जिम्मेदार।

भारत में प्रमुख आक्रामक प्रजातियों से संबंधित मामले:

- **चिल्का झील** - गाद और आक्रामक मीठे पानी की प्रजातियों से प्रभावित, जिससे मछली उत्पादकता में कमी आई और जैव विविधता की हानि हुई।
- **केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान** - Paspalum distichum की आक्रामक वृद्धि ने पारिस्थितिक चरित्र को बदल दिया, जिससे जल पक्षी प्रजातियों पर प्रभाव पड़ा।
- **कांजली (Kanjli) वेटलैंड्स** - आक्रामक जलकुंभी क्षेत्र।
- **रोपर (Ropar) आर्द्रभूमियाँ** - चल रही प्रबंधन योजनाओं के साथ, विभिन्न आक्रामक खरपतवार पर्यावरण के लिए गंभीर चिंता का विषय हैं।

DHYEYA IAS
most trusted since 2003

DAILY pre PARE
Current affairs summary for prelims

4 September, 2023

NEWS IN BETWEEN THE LINES

सलीमगढ़ किला

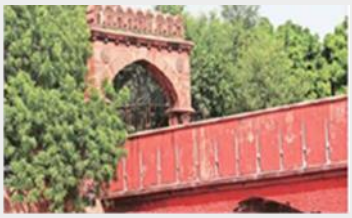

ऐतिहासिक महत्व: दिल्ली में यमुना नदी के किनारे स्थित सलीमगढ़ किला, हुमायूँ की सेना से बचाव के लिए सलीम शाह सूरी द्वारा 1546 में बनवाया गया था।
नामकरण और परिवर्तन: हुमायूँ की जीत के बाद, उसने सूरों के प्रति अपमान के संकेत के रूप में इसका नाम नूरगढ़ रख दिया।
जहांगीर का शासनकाल: जहांगीर के शासनकाल के दौरान एक पुल बनाया गया था, और किले की भूमि अकबर के शासन के दौरान मुगल कुलीन मुर्तजा खान को दे दी गई थी।
जेल के रूप में उपयोग किया जाता है: औरंगज़ेब के काल में , यह एक जेल बन गया, जहाँ ज़ेब-उन-निसा ने अपनी कैद के दौरान कविताएँ लिखीं।
1857 का विद्रोह: 1857 के विद्रोह के दौरान, इसमें विद्रोही सैनिक रहते थे और बाद में यह एक अंग्रेजी सेना शिविर बन गया।
द्वितीय विश्व युद्ध में उपयोग: द्वितीय विश्व युद्ध में इसमें भारतीय राष्ट्रीय सेना (आईएनए) के सैनिकों को कैद कर रखा गया ।
वर्तमान स्थिति: सलीमगढ़ किला पास के लाल किले की तुलना में कम जाना जाता है, परन्तु जी20 शिखर सम्मेलन की तैयारियों में इसे पहचान मिल रही है।

वायु गुणवत्ता जीवन सूचकांक (AQLI)

वायु गुणवत्ता जीवन सूचकांक क्या है?
वायु गुणवत्ता जीवन सूचकांक (AQLI) एक माप है जो जीवन प्रत्याशा पर वायु प्रदूषण के प्रभाव को मापता है।
उद्देश्य: जनता और नीति निर्माताओं को वायु प्रदूषण के स्वास्थ्य प्रभावों के बारे में बताना।
माप: यह वायु में PM2.5 सांद्रता का उपयोग करता है।
वैश्विक दायरा: यह वायु प्रदूषण के प्रभाव का आकलन करने के लिए दुनिया भर में लागू है।
WHO दिशानिर्देश: PM2.5 स्तरों की तुलना WHO दिशानिर्देशों (आमतौर पर 5 µg/m3) से करता है।
दक्षिण एशिया का संकट: बांग्लादेश, भारत, नेपाल और पाकिस्तान सहित दक्षिण एशिया अत्यधिक प्रदूषित देश है,यहाँ 2013 से 2021 तक कण प्रदूषण में 9.7% की वृद्धि हुई है।
देश पर प्रभाव: बांग्लादेश 2021 में सबसे अधिक प्रदूषित देश रहा , जिससे संभावित रूप से जीवन प्रत्याशा में 6.8 वर्ष की हानि हो सकती है। चीन में प्रदूषण में 42.3% की कमी हुई है , जिससे जीवन प्रत्याशा में 2.2 वर्ष की बढ़ोतरी हुई है।
भारत की चुनौती: भारत, 2021 में दूसरा सबसे प्रदूषित देश है, जिसमें PM2.5 का स्तर WHO के दिशानिर्देशों से 10 गुना अधिक हो गया है, जिससे संभावित रूप से जीवन प्रत्याशा में 5.3 वर्ष की हानि हो सकती है।

कार्टेशियन निर्देशांक (Cartesian Coordinates)

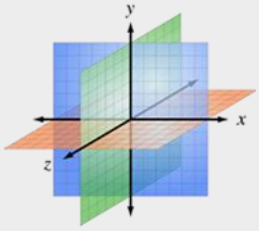

निर्देशांक प्रणाली:
निर्देशांक प्रणाली संख्याओं का एक समूह है जो अंतरिक्ष में एक बिंदु का पता लगाता है।
कार्टेशियन निर्देशांक: इसका 17वीं शताब्दी में रेने डेसकार्टेस द्वारा आविष्कार किया गया , यह लंबवत विमानों से एक बिंदु की दूरी निर्दिष्ट करने के लिए संख्याओं का उपयोग करता है। इसमें N तलों के लिए, N संख्याओं का उपयोग किया जाता है।
समतल पर स्थान: Google मानचित्र पर अक्षांश और देशांतर के समान, **कार्टेशियन निर्देशांक** समतल पर बिंदुओं का पता लगाने के लिए जोड़े (x और y) का उपयोग करते हैं।
त्रि-आयामी स्थान: 3डी में, एक अतिरिक्त संख्या (जेड-अक्ष) एक बिंदु का स्थान निर्दिष्ट करती है।
विश्लेषणात्मक ज्यामिति: डेसकार्टेस के आविष्कार ने बीजगणित और ज्यामिति को जोड़ा, जिससे विश्लेषणात्मक ज्यामिति, एक मौलिक गणित शाखा बन गई।
अनुप्रयोग: कार्टेशियन निर्देशांक का उपयोग खगोल विज्ञान, इंजीनियरिंग और ज्यामिति-संबंधित विषय-क्षेत्रों में किया जाता है।

पिरोला वेरिएंट (Pirola variant)

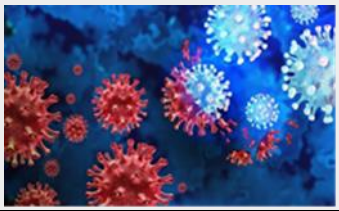

पिरोला वैरिएंट क्या है?
पिरोला वैरिएंट को BA.2.86 के नाम से जाना जाता है। यह XBB.1.5 (ओमिक्रॉन का एक उपप्रकार) की तुलना में 30+ स्पाइक प्रोटीन उत्परिवर्तन वाला एक नया कोविड -19 संस्करण है।
वैश्विक प्रसार : अमेरिका और ब्रिटेन सहित विभिन्न देशों में पाया गया।
वायरस में उत्परिवर्तन: ये वायरस, कोरोनाविरस की तरह, प्रतिकृति के दौरान स्वाभाविक रूप से उत्परिवर्तन करते हैं।
लाभप्रद उत्परिवर्तन: कुछ उत्परिवर्तन वायरस को अनुकूलित करने और प्रतिरक्षा के प्रति अधिक संक्रामक या प्रतिरोधी बनने में मदद कर सकते हैं।
विशेषज्ञ परिप्रेक्ष्य: ऐनी हैन, येल SARS-CoV-2 जीनोमिक सर्विलांस इनिशिएटिव पिरोला को ओमिक्रॉन सब-वेरिएंट के बीच रखते हैं।

जी20 पार्क

G20 पार्क का अनावरण:

एनडीएमसी ने चाणक्यपुरी में जी20 पार्क का उद्घाटन किया।

इसमें G20 सदस्य देशों के राष्ट्रीय पक्षियों और जानवरों की 19 मूर्तियां लगाई गई हैं।

अपशिष्ट-से-कला अवधारणा:

ये मूर्तियाँ पुनर्नवीनीकरण अवशिष्ट धातु सामग्री से बनाई गई हैं।

इसमें एनडीएमसी भंडारण सुविधाओं से प्राप्त सामग्री का भी उपयोग किया है।

जी20 शिखर सम्मेलन की तैयारी: यह 9-10 सितंबर को आगामी जी20 शिखर सम्मेलन की तैयारियों का हिस्सा है।

मूर्तिकला निर्माण प्रक्रिया: यह गढ़ी गांव में ललित कला अकादमी से जुड़े कलाकारों द्वारा शुरू की गई है।

थीम: "एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य"

विविध मूर्तियां:

यह विभिन्न राष्ट्रीय पक्षियों और जानवरों का प्रतिनिधित्व करता है, तथा G20 सदस्य देशों के बीच एकता को बढ़ावा देता है।

इसमें मोर, बाइसन, जगुआर, क्रेन, ऊँट, मैगपाई, एमु, ग्रे जे, भूरा भालू और गोल्डन ईगल शामिल हैं।

G20 में यूरोपीय संघ और 19 अलग-अलग देश शामिल हैं, जो अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का प्रतीक हैं।

समाचारों में स्थान

रेनी का बंदरगाह

हाल ही में यूक्रेन के ओडेसा क्षेत्र में रेनी समुद्री बंदरगाह को निशाना बनाकर तीन घंटे से अधिक समय तक रूसी ड्रोन द्वारा हमला किया गया था।

अवस्थिति :

रेनी का बंदरगाह दक्षिणी यूक्रेन में, विशेष रूप से ओड ईएसए क्षेत्र में स्थित है।

यह डेन्यूब नदी के किनारे स्थित है, जो इसे समुद्री व्यापार के लिए एक महत्वपूर्ण नदी बंदरगाह है।

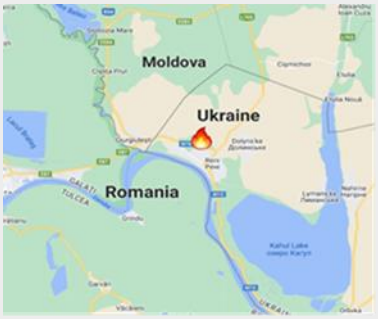

भौगोलिक महत्व:

रेनी डेन्यूब नदी के किनारे यूक्रेन के महत्वपूर्ण नदी बंदरगाहों में से एक है, जो कई यूरोपीय देशों से होकर बहती है।

काला सागर से संबंध:

डेन्यूब नदी के किनारे स्थित, रेनी का बंदरगाह काला सागर से एक जुड़ाव प्रदान करता है, जिससे अंतरराष्ट्रीय बाजारों से माल के परिवहन की सुविधा प्राप्त होती है।

यूक्रेन के लिए महत्व:

इस बंदरगाह का स्थान और बुनियादी ढांचा इसे यूक्रेन के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, विशेषकर कृषि उत्पादों के लिए महत्वपूर्ण बनाता है।

यह एक प्रमुख निर्यात प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करके यूक्रेन की अर्थव्यवस्था में योगदान देता है।

POINTS TO PONDER

- **एल1 लैग्रेंज बिंदु तक आदित्य-एल1 के 110 दिवसीय प्रक्षेप पथ की शुरुआत क्या दर्शाती है**? - ट्रांस-लैग्रेन्जियन1 सम्मिलन कुशलता
- **एनईजीडी दीक्षा प्लेटफॉर्म क्या एकीकृत कर रहा है?** - व्यक्तिगत अनुकूली शिक्षण (पीएएल)
- **ओरेगॉन हेल्थ एंड साइंस यूनिवर्सिटी (ओएचएसयू) के शोधकर्ताओं ने मासिक धर्म उत्पाद अवशोषण का परीक्षण करने के लिए क्या उपयोग किया?** - मानव रक्त
- **पुलिकाली किस भारतीय राज्य का लोक नृत्य है?** - केरल
- **सुकापाइका नदी किस नदी की सहायक नदी है?** -महानदी